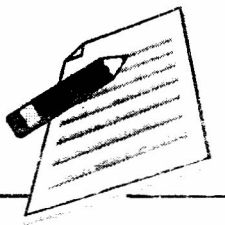

Notes

11

सांस्कृतिक, आत्मसातकरण एवं एकीकरण

पिछले पाठ में हमने सामाजिक अन्तर्क्रिया में वर्णित कुछ सामाजिक प्रक्रियाओं के विषय में पढ़ा तथा उनका विवेचन किया है। उन स्थितियों का अनुमान कीजिए, जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ सहयोगपूर्वक कार्य कर रहा हो, दूसरा अपने साथी के साथ प्रतिस्पर्धा में लगा हो तथा एक अन्य व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से विरोधी एवं संघर्षपूर्ण व्यवहार कर रहा हो। हम कह सकते हैं कि सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष प्राथमिक रूप से, व्यक्तियों और समूहों के बीच में निहित सामाजिक अन्तर्क्रिया की प्रकृति से संबंधित सामाजिक प्रक्रियाएं हैं। फिर भी, अन्य सामाजिक प्रक्रियाओं के कुछ अन्य प्रकार भी हैं जो बड़े पैमाने पर समाज में व्याप्त हैं। ये प्रक्रियाएं हैं: संस्कृतिकरण, आत्मसातकरण एवं एकीकरण। इन पद्धतियों से एक विशेष सामाजिक स्थिति में व्यक्तिगत अन्तर्क्रिया की प्रकृति उजागर नहीं होती। दूसरी ओर, ये समग्र समाज और संस्कृति के स्तर पर अन्तर्क्रियाओं के परिणामों पर प्रकाश डालती हैं। इस भाँति, संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि जहाँ पाठ दस में व्यक्तियों और समूहों के स्तर पर सामाजिक अन्त:क्रिया की प्रकृति का वर्णन है वहीं इस पाठ में इन अन्तर्क्रियात्मक प्रक्रियाओं के बड़े पैमाने पर चर्चा की जाएगी। अत: इस पाठ में प्रमुख रूप से सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की उन सभी सामाजिक प्रक्रियाओं को केन्द्र में रखकर चर्चा होगी।

सांस्कृतिक विशेषताएँ, सामान्य रूप से सभी समाजों में एक समान होती है। जैसे–

Notes

प्रेम, घृणा, अहंकार, पूर्वाग्रह, यौन-विषयक बातें एवं उत्सव मनाना आदि। किसी देश में विभिन्नता विभिन्न सांस्कृतिक, भौगोलिक, मानवीय कौशल, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, संघर्ष, रुचि और विरासत में प्राप्त और परंपरागत विचारधारा में प्रतिबिंबित होती हैं। इस पाठ में सामाजिक प्रक्रियाओं के विभिन्न पहलुओं से संबंधित मुद्दों की विवेचना की जाएगी और इसमें अन्य लोगों के साथ व्यक्ति के समूहों में रहने से संबंधित सामाजिक संबंधों का भी अध्ययन किया जायेगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- संस्कृतिकरण, आत्मसातकरण और एकीकरण आदि प्रक्रियाओं की अवधारणा को समझा सकेंगे।
- इन तीनों प्रक्रियाओं की प्रकृति और कारकों की विवेचना कर सकेंगे।
- इन तीनों प्रक्रियाओं में अन्तरसंबद्धता तथा विभिन्नताओं में सम्भाव्यत स्थापित कर सकेंगे; और
- विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों में इन सामाजिक प्रक्रियाओं को ग्रहण करने के उपायों और साधनों को स्पष्ट कर सकेंगे।

11.1 परसंस्कृतिकरण

परसंस्कृतिकरण का आशय है एक सामाजिक समूह से दूसरे सामाजिक समूह में सांस्कृतिक तत्वों का प्रसारण एवं स्थानांतरण। परसंस्कृतिकरण संस्कृति-परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जो विभिन्न संस्कृतियों वाले समुदायों के बीच संपर्क के कारण प्रतिफलित होती है। परसंस्कृतिकरण के मामले में दोनों संस्कृतियाँ परस्पर प्रभावित होती हैं क्योंकि एक संस्कृति के गुण (लक्षण) दूसरी संस्कृति में प्रविष्ट हो जाते हैं।

सभी समाजों और समूहों में सांस्कृतिक संपर्क होता रहता है। यह तभी संभव है जब लोग नए गुणों, स्वभावों को अपनाना चाहते हों और अपने पुराने स्वभाव एवं विशेषताओं को भी निरंतर बनाए रखना चाहते हैं।

संस्कृति किसी व्यक्ति की जन्मजात धरोहर नहीं होती। एक व्यक्ति सांस्कृतिक मूल्यों, रीति-रिवाजों, परंपराओं तथा प्रतिमानों को जन्म के बाद प्राप्त सामाजिक वातावरण में रहते हुए सीखता है। कोई भी संस्कृति शुद्ध, एवं आदिकालीन मौलिक संस्कृति नहीं

Notes

है। कोई संस्कृति पूरी तरह अलग या अछूती रह सके, यह संभव नहीं है। कोई संस्कृति अकेले जीवित नहीं रह सकती। निरंतरता और परिवर्तन से युक्त संस्कृति एक प्रगतिशील प्रक्रिया है।

आधुनिक यातायात और संचार-साधनों के द्वारा सांस्कृतिक संपर्क सुगम हुआ है। दो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के संपर्कों से विभिन्न सांस्कृतिक विशेषताओं या गुणों को परस्पर अपनाने में सहायता मिलती है। उदाहरणत: जिन क्षेत्रों में सम्पर्क का प्रभाव पड़ते हैं, वे हैं: कला, कला-कौशल के तत्त्व, वेषभूषा, भोजन विधियाँ, भाषा और साहित्य, रीति-रिवाज, धार्मिक पूजा-पद्धतियाँ, तथा आर्थिक और धार्मिक जीवन की शैलियाँ आदि।

भौतिक संस्कृतिक का आदान-प्रदान अधिक सुगम एवं तीव्र गति से होता है। परसंस्कृतिकरण की इस प्रक्रिया में इन सांस्कृतिक गुणों के आदान पर प्रबल संस्कृति का प्रभाव उन लोगों पर साफ-साफ दिखाई देता है, जो या तो संख्या में कम हैं अथवा नवागन्तुक या विस्थापित हैं। संस्कृतिकरण का अर्थ, एक सामाजिक समूह के तत्वों का दूसरे सामाजिक समूह में प्रसारण या स्थानांतरण है।

शिक्षा संस्कृतिकरण को प्रभावित करने वाला एक प्रबल कारक है, क्योंकि यह समुदाय को विचारों द्वारा प्रभावित एवं उत्प्रेरित करता है। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को प्रभावित या प्रतिबिंबित करने में आधुनिक यातायात और संचार माध्यम से विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। फिर भी, सांस्कृतिक आदान-प्रदान इतनी आसान प्रक्रिया नहीं है। यह आदान या अपनाया जाना अपनाने वाली की - स्वीकृति एवं परिवर्तित होने देने की योग्यताओं और क्षमताओं पर निर्भर करता है। संस्कृति का पूर्णरूपेण और एक साथ रोपण या आदान कभी संभव नहीं हो सकता है।

परसंस्कृतिकरण एक सार्वभौम और सतत प्रक्रिया है, जो काल की गति के अनुरूप घटित होती रहती है। सततता और परिवर्तन के साथ-साथ एकता और विस्तार से भी संस्कृति जानी-पहचानी जाती है। परसंस्कृतिकरण की स्थिति में, परंपरागत संस्कृति और आधुनिक संस्कृति के बीच का संघर्ष कोई गंभीर समस्याएँ पैदा नहीं करता।

11.1.1 परसंस्कृतिकरण की विशेषताएँ

1. परसंस्कृतिकरण एक सचेतन अथवा अचेतन प्रक्रिया हो सकती है। इसका आशय यह है कि दूसरे समूहों की सांस्कृतिक विशेषताओं या गुणों को ग्रहण करने वाले लोगों के यह अनुभव, कि वे दूसरी संस्कृति के तत्वों को अपना रहे हैं, हो भी सकता है या बिना यह जाने-समझे कि वे अन्य संस्कृति के तत्वों को अपना रहे हैं, वे उन तत्त्वों को ग्रहण कर सकते हैं।

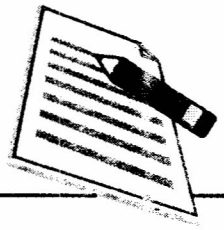

Notes

2. परसंस्कृतिकरण तब घटित होता है, जब विभिन्न संस्कृतियों वाले दो या दो से अधिक समुदाय एक दूसरे के संपर्क में आते हैं और परस्पर एक दूसरे के सांस्कृतिक तत्वों को अपनाना प्रारंभ कर देते हैं। अत: यह सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया दुतरफा होती है। इससे प्रभावित दोनों ही समूहों में कुछ परिवर्तन होते हैं।

3. परसंस्कृतिकरण एका-एक नहीं हो जाता। समुदायों के द्वारा सांस्कृतिक तत्वों के परस्पर आदान से पहले बहुत समय लगता है। परंतु परसंस्कृतिकरण में लगने वाला समय, निश्चित रूप से आत्मसातकरण में लगने वाले समय से कम होता है। अत: आत्मसातकरण की तुलना में परसंस्कृतिकरण में अपेक्षाकृत कम समय लगता है।

4. परसंस्कृतिकरण या तो सीधे संपर्क के माध्यम से घटित हो सकता है अथवा अपरोक्ष रूप से दूर से भी घटित हो सकता है, जैसे– रेडियो, दूरदर्शन, समाचार-पत्रों एवं साहित्य आदि के माध्यम से।

5. आत्मसातकरण या एकीकरण के लिए परसंस्कृतिकरण एक पूर्व-निर्धारित शर्त या अवस्था होता है। जैसे ही सांस्कृतिक संपर्क होता है उसी समय से ही आत्मसातकरण अथवा एकीकरण की दिशा में अग्रसर होने की स्थिति उत्पन्न होती है।

पाठगत प्रश्न 11.1

उपयुक्त पारिभाषिक शब्दों से रिक्त स्थनों की पूर्ति कीजिए:

(अ) परसंस्कृतिकरण ..... की एक प्रक्रिया है।

(ब) परसंस्कृतिकरण एक ..... है।

(स) यह परस्पर ..... से प्रतिफलित होता है।

(द) सांस्कृतिक संपर्क .....और ..... के द्वारा सुगम हो जाता है।

(इ) परसंस्कृतिकरण का अर्थ ..... एक सामाजिक समूह के सांस्कृतिक तत्वों का दूसरे समूह के सांस्कृतिक तत्वों में ..... होता है।

(ई) परसंस्कृतिकरण ..... और ..... प्रक्रिया होता है।

Notes

(ज) परसंस्कृतिकरण ..... और ..... की एक पूर्व निर्धारित शर्त या अवस्था होती है।

आत्मसातकरण

आत्मसातकरण भी सांस्कृतिक संपर्क के ही द्वारा होता है। यह एक सामान्य धारणा है, कि जितने ज्यादा व्यक्तियों का परस्पर संपर्क होगा उतने ही वे परस्पर एक दूसरे को पसंद करेंगे। जितना अधिक वे परस्पर संवाद करेंगे उतने ही अधिक वे समान बनने का प्रयास करेंगे। यह एक सामान्य विश्वास है कि हम दूसरों के बारे में जितना ज्यादा जानते हैं उतने ही अधिक हम उन्हें पसंद करते हैं। आत्मसातकरण का यह अर्थ होता है कि एक व्यक्ति अथवा समुदाय ने दूसरे व्यक्ति अथवा समुदाय के जीवन मूल्यों को इस सीमा तक ग्रहण कर लिया हो कि उसकी अपनी पहचान विलीन हो गयी हो। आत्मसातकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें असमान संस्कृतियों वाले व्यक्तियों का निकट संपर्क सर्वदा सांस्कृतिक तत्वों के सम्मिलन में प्रतिफलित होता है। हालांकि दूसरों की तरह आदान या ग्रहण करना एक ही दिशा में इस प्रकार घोषित नहीं किया जा सकता।

आत्मसातकरण प्रायः एक रूप से घटित होने वाली प्रक्रिया मानी जाती है। यह "समान मानसिकता" के सिद्धान्त के समान समझी जाती है। यह विचार इस लोकप्रियता पर आधारित है कि समानताएँ और समरूपताएँ एकता के समान या समरूप होती हैं। आत्मसातकरण का विचार महसूस करने, सोचने और तदनुरूप कार्य करने में निहित माना जाता है.

आत्मसातकरण का दूसरा अर्थ यह होता है कि आप्रवासी ने पूर्व में कुछ योगदान दिया है उससे अपेक्षा की जाती है कि वह अपने स्वभाव, संस्कृति और दर्शन से आने वाली नई पीढ़ी को भी कुछ अवश्य देगा। इस विचार का उद्गम आप्रवासियों में निहित है और उन लोगों के द्वारा निर्धारित किया जाता है जो लोग उनके निकट संपर्क में होते हैं। आत्मसातकरण की प्रक्रिया जितनी समानता से संबद्ध होती है उतनी ही विभिन्नताओं से भी।

आत्मसातकरण अन्तर्भेदनीयता और सम्मिलन की एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति और समूह दूसरे व्यक्तियों या समूहों की स्मृतियों, भावों तथा अभिवृत्तियों को अपने अनुभवों तथा इतिहास के आदान-प्रदान द्वारा ग्रहण करते हैं और इनके सम्मिलन या संयुक्त होने से एक सामान्य सांस्कृतिक जीवन प्रारंभ करते हैं। जहां तक परंपरा के इस आदान-प्रदान

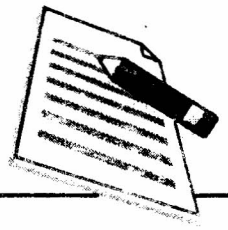

Notes

में निहित होने का प्रश्न है, समान अनुभवों में यह आत्मीय सहभागिता एवं आत्मसातकरण ऐतिहासिक प्रक्रिय के केन्द में स्थित है।

आत्मसातकरण की प्रक्रिया में अभिवृत्तियों में सुधार केवल धीरे-धीरे ही नहीं होते अपितु संयत भी होते हैं।

11.2.1 आत्मसताकरण की विशेषताएं

1. आत्मसातकरण, सामाजिक प्रक्रिया में संलग्न समूहों के बिना जाने-बूझे और सचेत प्रयासों के घटित होता है। अत: आत्मसातकरण एक अचेतन प्रक्रिया है।

2. सामान्यत: आत्मसातकरण होने में लंबा समय लगता है। जब दो संस्कृतियाँ आपस में संपर्क में आती हैं तो एक लम्बे समय के बाद ही एक दूसरे में विलीन हो पाती हैं। अतएव आत्मसातकरण एक धीमी प्रक्रिया है।

3. आत्मसातकरण तभी घटित होता है जब इस प्रक्रिया में संलग्न संस्कृतियाँ असमान हों। उनमें एक प्रकार की श्रेणीबद्धता होती है। इनमें से एक आधिपत्य वाली अर्थात प्रबल होती है, तो दूसरी अधीन संस्कृति होती है। प्राय:, प्रबल संस्कृति अधीन अथवा अपेक्षाकृत छोटी संस्कृतियों के साथ आत्मसातकरण की दिशा में आगे बढ़ती हुई उन्हें स्वयं में आत्मसात कर लेती हैं।

4. आत्मसातकरण एक अस्थाई घटना नहीं है। इसके प्रभाव स्थायी होते हैं। आत्मसातकरण के कारण संस्कृति में घटित होने वाले परिवर्तन एक लम्बे समय तक चलते या निरंतर बने रहते हैं।

पाठगत प्रश्न 11.2

(1) निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ठीक नहीं है:

(अ) आत्मसातकरण सांस्कृतीकरण का अस्थायी स्वरूप है।

(ब) आत्मसातकरण प्रक्रिया धीमी होती है।

(स) आत्सातकरण अचेतन होता है।

(द) आत्सातकरण सांस्कृतीकरण की उपज है।

(2) निम्नलिखित में से कौन-सा तत्व आत्मसातकरण में बाधक होता है?

(अ) अन्तरजातीय विवाह

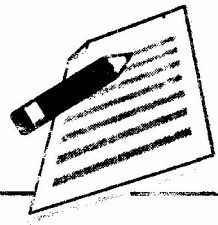

Notes

(ब) सांस्कृतिक समरूपता के साथ आर्थिक समानता

(स) तीव्र सांस्कृतिक भेदभावों के साथ नकारात्मक अन्योन्यता

(द) इनमें से कोई नहीं।

(3) आत्मसातकरण ..... की एक प्रक्रिया है। (सम्मिलन/बिखराव/सांस्कृतिक अलगाव/ एकीकरण) में से उपयुक्त शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(4) आत्मसातकरण में-

(अ) संलग्न संस्कृतियां सर्वदा समान होती हैं।

(ब) संलग्न संस्कृतियां समरूप सामाजिक संगठन से पहचानी जाती हैं।

(स) एक संस्कृति प्रबल होती है और दूसरी संस्कृति अधीन या संख्या में छोटी होती है।

(द) उपर्युक्त सभी।

11.3 एकीकरण

'एकीकरण', अनेक अलग-अलग संघटकों का एक इकाई में इकट्ठा या एकीकृत होने की एक प्रक्रिया है। अतएव, एकीकरण सदस्यों को एक साथ रहने के लिए इकट्ठा करता एवं साथ-साथ लाता है और सदस्यों को एक समूह में रहने को विवश करता है। इस भांति, एकीकरण एक समूह को स्थायित्व प्रदान करता है। यह संगठन की एक प्रक्रिया के रूप में कार्य करता है। यह सामाजिक एकाकीपन, अलगाव तथा बिखराव की प्रक्रिया के विपरीत होता है। सामूहिक एकीकरण समूह के परस्पर मिलकर रहने अथवा सामूहिक अखंडता व एकता से संबंध रखता है।

एकीकरण एक सामूहिक प्रक्रिया है। यह मुख्य रूप से उन लोगों से संबंधित होती है जो समूहों में रहते हैं या अन्य समूहों की उपस्थिति में रहते हैं। अतएव समूहों के बनाने की आवश्यकताओं और तरीकों को समझना महत्त्वपूर्ण है। इस जानकारी से हमें इन समूहों में लगाव के माप और विस्तार को समझने में सहायता मिलेगी।

समूह अलग-अलग सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए बनाए जाते हैं। एक समूह अपने सदस्यों को सदस्यता एवं सुरक्षा प्रदान करता है और इस प्रकार यह एक समूह विशेष में परस्पर अपनेपन की भावना पैदा करने में सहायक होता है। इसे

Notes

एक गणनापरक अर्थात् सांख्यिकीय श्रेणी में परिभाषित किया जा सकता है। समूह का दूसरा प्रकार सामाजिक श्रेणी है। यह उन लोगों से संबंध रखती है, जिनकी समान प्रस्थिति होती है तथा उसी भूमिका का निर्वाह वे करते हैं। एक सामाजिक समूह सामाजिक अन्तर्क्रिया, परस्पर विश्वासों और नैतिक मूल्यों द्वारा आपस पहचाना जाता है। सामाजिक समूह के उदाहरण परिवार, संबंधी समूह, गाँव और जाति-समुदाय आदि होते हैं।

सदस्यों को एक साथ रखने और समूह की अखंडता बनाए रखने के लिए एकीकरण एक संयोजन शक्ति का काम करती है। समूह का स्थायित्व एकीकरण पर आधारित होता है। यह वह प्रक्रिया है, जो सदस्यों को एक समूह में एकजुट रहने को विवश करती है। एकीकरण सभी सदस्यों को एक समूह में जोड़े रहने और उन्हें एक इकाई में रखने की प्रक्रिया है।

समूह के एकीकरण का संबंध, विभिन्न स्तरों पर समूहों के सदस्यों के बीच सामाजिक संबंधशीलता से होता है। यह सामाजिक संबंधशीलता मात्रा और तीव्रता में भिन्न-भिन्न और इन्हें उच्च स्तर पर एकीकृत, कहा जा सकता है।

विभिन्न समूहों में एकीकरण के स्तरों को परिवार, वंश, गाँव, संगी-साथी, जाति, वर्ग, धर्म, क्षेत्र, राज्य और राष्ट्रीय स्तरों में विभाजित किया जा सकता है। इन सभी स्तरों में परिवार को उच्च स्तरीय एकीकृत कहा जा सकता है जबकि अन्य समूहों में एकीकरण का सामाजिक-आर्थिक स्तर 'मुक्त रूप से एकीकृत' कहा जाएगा। यह विभिन्न समूहों की भिन्न-भिन्न स्थिति और आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। राष्ट्रीय आपदा और विदेशी आक्रमण के समय एकीकरण राष्ट्रीय स्तर पर बहुत ऊँचा होता है, जिसमें राष्ट्रीय अखंडता और एकता प्रदर्शित होती है। प्रस्थिति क्षेत्रीय, जातीय, तथा सामाजिक-सांस्कृतिक स्तरों पर भी धार्मिक होती है।

11.3.1 एकीकरण के घटक

एकीकरण निम्नलिखित घटकों से बनता है:

1. समान गुणों का होना, श्रम के विभाजन, पररप्र संबंधों तथा अन्तर्निर्भरता के परिणामस्वरूप समूह की अखंडता में सुदृढ़ता लाता है।
2. समूह द्वारा निर्धारित मानकों को अपनाना तथा पालन करना, जोड़ने वाला तत्व होता है।
3. समूह में सामाजिक नियंत्रण को बढ़ावा देने के लिए 'वैचारिक केन्द्रीकरण'

Notes

(ईथनोसेंट्रिज्म) अथवा एक समूह के सदस्यों के बीच अपनी संस्कृति को अधिमान्यता देना प्रकार्यात्मक होता है।

4. सदस्यों के बीच अनुशासन समूह को जोड़ता है। एक समूह के एकीकरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्वों में अन्तरनिर्भरता, क्रिया, मतैक्य पाया जाता हैं। समूह का परस्पर मेलजोल तथा एकीकरण आपसी संतुष्टि द्वारा मजबूत होता है, मात्र सामाजिक अन्तर्क्रिया द्वारा ही नहीं।

11.3.2 एकीकरण को प्रभावित करने वाले तत्व

1. समूह का आकार: एक बड़े समूह की अपेक्षा छोटे समूहों में एकीकरण अधिक आसान होता है।
2. प्राथमिक समूहों में एकीकरण की अधिक शक्ति या क्षमता होती है।

भौतिक अस्थिरता और समूह के बीच संबंधों की समरूपता एवं एकीकरण के बीच सीधा सम्बन्ध देखा जा सकता है। अस्थिरता के फलस्वरूप एक परदेशी और नया व्यक्ति समूह में प्रवेश करता है तो समस्या यह आती है कि समूह की अखंडता को खतरे में डाले बिना उसे कैसे आत्मसात किया जाए। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नवागंतुकों का समूह जितना बड़ा होगा उतना ही जयादा स्थापित समूह के द्वारा उनके एकीकरण में प्रतिरोधा होगा।

11.3.3 एकीकरण की विशेषताएँ

1. परसंस्कृतिकरण और आत्मसातकरण की अपेक्षा एकीकरण एक जटिल और पेचीदी प्रक्रिया है।
2. यह पेचीदा इसलिए है क्योंकि इसमें संलग्न समूहों के लिए पर्याप्त संरचनात्मक समायोजनों की आवश्यकता होती है।
3. एक ही समुदाय में परिवर्तन असमान होता है कुछ समूह अपने परंपरागत मूल्यों को बनाये रखते हैं तो कुछ नये रीतिरिवाजों को अपना लेते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि सभी समूह उस समुदाय से पूरी तरह एकीकृत नहीं हो पाते हैं।
4. एकीकरण का संबंध प्रमुख संस्कृति के साथ विभिन्न सांस्कृतिक घटकों को मिलाने की प्रक्रिया से होता है।

मिलने वाली (संघटक) संस्कृतियाँ अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रहती हैं और साथ ही जिस संस्कृति में उनका एकीकरण होता है, उसकी सामान्य संस्कृति के कुछ पहलुओं से तालमेल कर लेती हैं।

Notes

पाठगत प्रश्न 11.3

निम्नांकित में सत्य/असत्य को चिह्नित कीजिए:

1. समूह का एकीकरण, एकीकरण के विभिन्न स्तरों पर समूहों के सदस्यों के बीच के संबंधों से संबंधित होता है। (सत्य/असत्य)
2. समूह द्वारा निर्धारित विभिन्न मानकों को अपनाना और पालन करना एक कारक नहीं होता। (सत्य/असत्य)
3. एक समूह का आकार उसके एकीकरण को प्रभावित करता है। (सत्य/असत्य)
4. प्राथमिक समूह की अपेक्षा द्वितीय समूह में एकीकरण की अधिक क्षमता निहित होती है। (सत्य/असत्य)
5. एकीकरण संगठन की प्रक्रिया के रूप में माना जाता है। (सत्य/असत्य)

11.4 परसंस्कृतिकरण, आत्मसातकरण एवं एकीकरण: एक तुलना

आप परसंस्कृतिकरण, आत्मसातकरण एवं एकीकरण की अवधारणा और अधिक स्पष्टत: समझ सकेंगे। यहाँ उनकी समानताओं तथा भिन्नताओं पर प्रकाश डालते हुए इन तीनों अवधारणाओं का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

इन तीनों में कुछ बातें समान हैं तो कुछ में कतिपय भिन्नताएँ भी मौजूद हैं। उनमें से कुछ समान बातों का उल्लेख निम्नानुसार है:

1. सांस्कृतिक संपर्क के मूल सिद्धान्त सांस्कृतीकरण, आत्मसातकरण और एकीकरण होते हैं।
2. ये सामाजिक प्रक्रियाओं के मूल अंग हैं। दूसरे शब्दों में ये सामाजिक प्रक्रियाएँ विभिन्न संस्कृतियों और सामाजिक समूहों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को इंगित करती है।
3. इन तीनों में विभिन्न संस्कृतियों के तत्वों के आदान प्रदान और ग्रहण करने की विशेषताएं होती हैं।
4. सांस्कृतिक गुणों का प्रसारण और स्थानांतरण और उनका विभिन्न सीमा में ग्राह्यता और अपनाया जाना भी इन तीनों प्रक्रियाओं की समान विशेषताएँ हैं।

परसंस्कृतिकरण

- सांस्कृतिक संपर्क की स्थिति (अवस्था)
- जहाँ दो समुदायों में सांस्कृतिक गुणों एवं विशेषताओं का परस्पर विनिमय होता है।
- या तो सीधे पहले-पहल संपर्क के माध्यम से संभव हो अथवा दूर से अपरोक्ष संपर्क के माध्यम से हो।
- आत्मसातकरण एक प्रक्रिया का रूप ले सकता है अथवा एक उत्पाद हो सकता है।

- जब एक संस्कृति अपनी पहचान खो बैठती है।
- दूसरी संस्कृति में विलीन होकर।

आत्मसातकरण

एक लंबी अवधि से चली आ रही सांस्कृतिक प्रक्रिया का उत्पाद आत्मसातकरण होता है।

- जब अनेक संस्कृतियाँ एक साथ रहते हुए एक समान संस्कृति अथवा प्रमुख संस्कृति के गुण अपना लेती हैं।
- अपनी-अपनी पहचानें खोए बिना

एकीकरण

एकीकरण भी एक प्रक्रिया अथवा एक उत्पाद हो सकता है।

चित्र 9.2। परसंस्कृतिकरण, आत्मसातकरण एवं एकीकरण में संबंध

11.5 इनमें निहित भिन्नताएं निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझी जा सकती हैं

(1) आत्मसातकरण का संबंध संस्कृतियों के परस्पर सम्मिलन से होता है, जबकि सांस्कृतीकरण का संबंध एक बड़े पैमाने पर बड़े विस्तृत क्षेत्र में सांस्कृतिक तत्त्वों के प्रसारण अथवा स्थानांतरण से होता है। दूसरी ओर एकीकरण सदस्यों को पास-पास लाता है और समूह में मेलजोल तथा अखंडता बनाए रखता है।

Notes

(2) परसंस्कृतिकरण एकीकरण के विरुद्ध एक निरंतर प्रक्रिया का काम करता है, जिसे संगठन की एक प्रक्रिया समझा जाता है। इन दोनों से अलग, आत्मसातकरण सामाजिक संपर्क की अन्तर्क्रिया की चरम उपलब्धि होता है।

(3) आत्मसातकरण की प्रक्रिया विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों और भावों के सम्मिलन में लंबा समय लगाती है। इसके विपरीत, एकीकरण सांस्कृतिक अनेकता, स्वैच्छिक और अपूर्ण आत्मसातकरण से संबंधित होता है। यह थोड़ी सी अवधि में घटित हो जाता है। परसंस्कृतिकरण कभी-कभी, साफ और स्पष्ट होता है, इससे त्वरित सामाजिक परिवर्तन घटित हो जाते हैं।

(4) आत्मसातकरण को एक स्वत: घटित प्रक्रिया के रूप में भी समझा जाता है जबकि परसंस्कृतिकरण और एकीकरण सामाजिक प्रक्रियाएँ हैं जो सांस्कृतिक संपर्क से संभव होती है।

आपने क्या सीखा

- परसंस्कृतिकरण का अर्थ है एक सामाजिक समूह से दूसरे सामाजिक समूह में सांस्कृतिक तत्त्वों का प्रसारण और स्थानांतरण।
- संस्कृति आनुवंसिक नहीं होती। जन्म के बाद, व्यक्ति सांस्कृतिक मूल्यों, रीति-रिवाजों, परंपराओं तथा प्रतिमानों को सीखता है।
- सामाजिक संपर्क, चाहे थोड़ा हों या अपरोक्ष, एक सांस्कृतिक-समूह से दूसरे में स्थानान्तरण के लिए पर्याप्त होता है।
- जातियों और राष्ट्रीयताओं के संपर्कों, संघर्षों तथा सम्मिलनों के समय भाषा में होने वाले परिवर्तन आत्मसातकरण की प्रक्रिया के अधिक उपयुक्त आधार प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में प्रिंटिंग प्रेस (मुद्रणालय), पुस्तक और समाचार-पत्रों ने भाषा का मानकीकरण किया है। प्रेस ने देश के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के संदर्भ में भाषा के विकास में वह योगदान दिया है जो पहले के समय में असंभव था।
- सांस्कृतिक प्रसारण में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। विशेष रूप से बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त मुहावरे, संभवत:, ऐतिहासिक अनुभवों को स्वयं इतिहास की अपेक्षा ज्याद सटीक रूप से प्रदर्शित करते हैं। अधिकांश ऐतिहासिक पुरुषों में एकता का आधार जातिगत होने की अपेक्षा भाषागत अधिक रहा है।
- भौतिक सांस्कृतिक तत्व जैसे संचार एवं यातायात के साधन, मकान, वर्तन, आभूषण इत्यादि का प्रसारण आभौतिक सांस्कृतिक तत्व जैसे धर्म, विस्वास परम्परा आदि का विकास एवं प्रसार धीमी गति से होता है।

Notes

- आत्मसातकरण शीघ्रता और पूर्णता सामाजिक संपर्क की घनिष्टता पर निर्भर करती है। एक विचित्र विरोधाभास है कि दासता, विशेषरूप से घर के अंदर की दासता, संभवत: औपचारिक अन्तर्जातीय विवाह के अलावा, आत्मसातकरण को प्रोन्नत करने में सर्वाधिक कारगर रही है।
- आदिकालीन लोगों में परस्पर विरोधी स्वभाव वाले और परदेशी लोगों का औपचारिक उत्सवों में अपनाया जाना और प्रवेश करना आत्मसातकरण के उदाहरण हैं।
- एकीकरण के समान आत्मसातकरण कुछ सीमा तक ही होता है। एक ही संस्कृति के लोगों के समूह आतिथेय संस्कृति (जो मिला लेती है) में ही योगदान नहीं देते अपितु वे अपने अनेक रीति-रिवाजों को बनाए रखते हैं ताकि सांस्कृतिक विभिन्नता बनी रहे। सांस्कृतिक अनेकता, प्राय: स्वैच्छिक, एवं अपूर्ण आत्मसातकरण उत्पन्न कर सकती है।
- अप्रवासियों में विभिन्नता आत्मसातकरण के दो भाग या अवस्थाएं दिखाई देती है; यद्यपि एक समय में ये दोनों एक दूसरी को दबा या ढक सकती हैं। उनमें से एक हैं– पैतृक संस्कृति का दबा देना; दूसरी है नए तरीकों को ग्रहण कर लेना जिसमें नई भाषा भी शामिल है।

पाठान्त प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 100 से 200 शब्दों में दीजिए

1. निम्नांकित की आवधारणा तथा अर्थ का वर्णन कीजिए:

   (अ) परसंस्कृतिकरण (ब) एकीकरण और (स) आत्मसातकरण

2. परसंस्कृतिकरण एकीकरण एवं आत्मसातकरण की तुलना कीजिए।
3. परसंस्कृतिकरण, एकीकरण और आत्मसातकरण की विशेषताओं में निहित भेद स्पष्ट कीजिए।

शब्द कोष

1. इन्सुलेसन: अलगाव, विलगाव।
2. प्रिस्टाइन: शुद्ध, बिना मिलावट का, सही तरीके से परंपरागत।
3. फ्यूजन : सम्मिलन (घुलमिल जाना)।

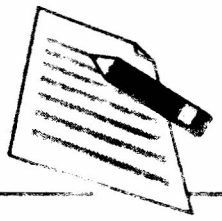

Notes

4. इनकारपोरेटेड : सम्मिलत करना, लागू करना।
5. इन्टरर्पिटेशन : पूर्णत: समझाना, छानबीनकर बताना।
6. पैटर्नड् इन्टरैक्शन : प्रतिमानित अन्त:क्रिया
7. ग्रुप सॉलिडैरिटी : समूह की अखंडता, सामूहिक एकता
8. एनोमी : प्राय: घटित होने वाली सामाजिक अव्यवस्था; प्रतिमानहीनता।
9. ईथनोसेंट्रिज़्म : व्यक्ति की अपनी संस्कृति, परंपराओं आदि में अटूट आस्था होना तथा उसे सर्वश्रेष्ठ मानना अर्थात 'आत्मकेन्द्रित' होना।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

(अ) सांस्कृतिक परिवर्तन (ब) दुतर्फा प्रक्रिया (स) संपर्क
(द) यातायात एवं संचार माध्यम (ई) प्रसारण (फ) सार्वभौम और सतत
(ज) आत्मसातरकण और एकीकरण

11.2

(1) (अ) (2) (स) (3) (फ्यूजन) सम्मिलन
(4) (स)

11.3

(1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) असत्य
(5) असत्य

पाठ्य पुस्तकें

1. ओगबॉर्न, डब्ल्यू, एफ. एंड एम. एफ. निमकॉफ (1958), 'सोशल चेन्ज'
2. फिशर, एच. एच. (1957), 'सोशियोलोजी'
3. ग्लिन, जे.जे. एवं जे. पी. ग्लिन (1998), 'एन इंट्रोडक्शन ऑफ सोशियोलॉजी'
4. लिहे जी. आर. एट अल (1980)
5. मैकाइवर एवंपेज (1985), 'सोसाइटी'